भारतीय संस्कृति बहुत विलक्षण है। इसके सभी सिद्धान्त पूर्णतः वैज्ञानिक है और उनका एक मात्र उद्देश्य मनुष्य मात्र का कल्याण करना है। मनुष्य मात्र का सुगमता से एवं शीघ्रता से कल्याण कैसे हो इसका जितना गम्भीर विचार भारतीय संस्कृति में किया गया है उतना अन्यत्र नहीं मिलता। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त मनुष्य जिन-जिन वस्तुओं एवं व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है और जो-जो क्रियायें करता है उन सबको हमारे क्रान्तिदर्शी ऋषि-मुनियों ने बड़े वैज्ञानिक ढंग से सुनियोजित, मर्यादित एवं सुसंस्कृत किया है और उन सबका पर्यवसान परम श्रेय की प्राप्ति में किया है।

हमारे प्राचीन ग्रन्थों में ऐसी न जाने कितनी विद्यायें छिपी पड़ी है जिनकी तरफ अभी लोगों का ध्यान नहीं गया है। भारतीय संस्कृति में गुरू को ईश्वर से बढ़कर माना गया है। गुरू हमारे जीवन का मार्ग दर्शक है। इस जीवन रूपी नौका को पार करने के लिये गुरू ही मार्ग प्रसस्त्र करता है। जैसा की वेदों में कहा गया है-

गुरूब्रम्हा गुरू विष्णु गुरू देवो महेश्वरः।

गुरू साक्षात् पर ब्रम्ह तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

गुरू ईश्वर है। उसकी प्रेरणा से ही सब कुछ होता है।

गुँरू की प्रेरणा से ही इस महाविद्यालय की स्थापना की गई। इस संस्था को स्थापित करना एक बहुत बड़ा कारण है जब मैं पढ़ता था तब मेरे छात्र जीवन में बहुत सी कठिनाइयाँ हुई मैंने अथक परिश्रम से पढ़ाई की लेकिन मेरे साथ बहुत सारे मित्र ऐसे है जो कि ग्रामीणस्तर पर शिक्षण कार्य किया लेकिन महाविद्यालय स्तर को पढाई करने के लिये उनको शहर जाना पड़ता था। किसी प्रकार छात्र तो पढ़ाई कर लेते थे लेकिन छात्रायें इण्टर के बाद पढ़ाई का अभाव था महाविद्यालय की स्तरीय पढ़ाई करने के लिये उन्हें शहर जाना पड़ता था। ग्रामीण स्तर के लोग अधिकतर अपने बच्चों की आर्थिक अभाव के कारण दूर जाने से मना कर देते थे। चूंकि मैं एक किसान का पुत्र हूँ मुझे इन सभी परिस्थितियों से गुजरना पड़ता था।

आज मैं इन कठिनाई भरे मार्ग को पार कर एक नई मन्जिल की खोज की ईश्वर ने मुझे इस लायक बना दिया कि मैंने इस महाविद्यलाय की स्थापना की। ताकि जो कठिनाइयाँ मेरे गांव क्षेत्र के लोगो ने उठाई अब उनके बच्चों को ऐसा न करना पड़े। अब किसी भी छात्र-छात्रा को शहर नही जाना पड़ेगा शहर जैसे ही आधुनिक शिक्षण व्यवस्था इस विद्यालय में उपलब्ध होगी। इस महाविद्यालय में गांव, क्षेत्र, जनपद व प्रदेश के विद्यार्थी उच्च शिक्षण ग्रहण करेंगे एवं अपने जीवन का लक्ष्य यही से निर्धारित करगें। जरूरत है तो सिर्फ आपके आशीर्वाद की। जय हिन्द, जय भारत, वन्दे मातरम्।

-उदय बहादुर सिंह

प्रबन्धक

काका भूखन सिंह गया बक्श सिंह महाविद्यालय

नरायनपुर, अजगैन, उन्नाव

मो. 9919570511